रूह का जीवन हक चरण

आदरणीय सरकार श्री और श्री राजजी के लाडले सुन्दरसाथ जी,

हमारी परआतम की नजर राजजी के चरणों में है। चरणों से ही हमारी नजर इस खेल में आई है। श्री राज जी के चरण कमल ही हमारा अर्श है और राजजी महाराज का अर्श ही मोमिनों का दिल है। इस हिसाब से श्री राजजी महाराज और हम अरस-परस हैं।

फेर-फेर चरण को निरखिए, रूह को एही लागी रट।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट।।

सुन्दरसाथ जी, परमधाम में हमारी नजर श्री राजजी महाराज की नजरों से पल भर के लिए भी जुदा नहीं होती पर जब राजजी के दिल में यह बात आई कि मैं अपनी रूहों को अपनी इश्क और साहेबी दिखाऊँ तो सही, तो हमारी नजर श्री राजजी ने अपने चरणों में खैंच ली। सुन्दरसाथ जी, श्री राजजी ने हमें इस कारीगरी से खेल दिखाया कि परमधाम से यहाँ आए भी नहीं हैं और माया का खेल भी देख रहे हैं। श्री राजजी के चरण हमारे दिल में हैं और नैनों में हैं। वह हमसे कभी अलग नहीं हो सकते। जिस दिल में श्री राजजी बैठे हैं, वहीं पर मोमिनों का सिजदा है, बन्दगी है। उसी के दर्शन ही यात्रा है और वहीं पर ही समर्पण है। वही पर बैठ कर चर्चा सुनकर आत्मा को खुराक देनी है। राजजी हमारे दिल में बैठे हैं और हम अपने दिल सहित राजजी के दिल में बैठे हैं, फिर भी हमें तड़प क्यों नहीं आती। मोमिन के लिए तो शुरू से आखिर तक श्री राजजी महाराज के चरणों तले ही उनका ठिकाना है। इसीलिए कुरान में लिखा है कि मोमिन चौदह तबकों को रद्द करके श्री राजजी के चरणों में अपना चित्त लगायेंगे। सुन्दरसाथ जी, सरकार श्री हमें समझाते-समझाते थक गये पर हम हैं कि इस माया को छोड़ कर अपने धनी के सुखों में गर्क होना ही नहीं चाहते।

सुन्दरसाथ जी, श्री राजश्यामा जी के चरणों की शोभा एक बार दिल में बस जाय तो परमधाम हमसे दूर नहीं है। राजजी के चरण कमल की शोभा का वर्णन इस जुबान से करना किसी के बस की बात नहीं है। प्यारे सुन्दरसाथ जी, श्री राजजी के चरणों की तली अति उज्जवल, नर्म और लाल रंग की है। दोनों चरण कमलों की तली की छबि मन को मोह लेती है। यदि रूह श्री राजजी के चरण कमल के तले की गहराई की रेखा को देखती है तो वह अटक जाती है, उसे फिर इन चरणों की रेखा के अतिरिक्त सारी दुनियां के दुख आग के समान लगते हैं। श्री राजजी महाराज के चरण कमलों में कई गुण हैं। लाल एड़िया जो अति नर्म हैं जिनका रंग गोरा है, रस से भरी हैं। चरणों के नीचे की छवि और ऊपर की छवि अलग तरह की है। यह सभी गुण रूह को अपनी तरफ खींचते हैं। जो रूह चरणों की तरफ खिंच जाती है, वही

Nijanand App

श्री राजजी के दिल के रहस्यों को समझ पाती है। सुन्दरसाथ जी, मोमिनों की रूह फूल की तरह है और श्री राजजी के चरण बेल की तरह है। अब यह फूल बेल की जुदाई कैसे सहन करे? लेकिन सुन्दरसाथ जी, हम तो यह जुदाई बिना किसी दुख के सहन कर रहे हैं क्योंकि हमें माया ज्यादा प्यारी है। राजजी के चरणों के बिना तो हमारा गुजारा चल सकता है पर माया के बिना हमारा गुजारा नहीं चल सकता क्योंकि माया को ही हमने अपना सब कुछ समझ लिया है। अब श्री महामति जी राजजी के चरणों की शोभा का वर्णन करते हुए कहते हैं-हे सखी, श्री राजजी महाराज के नख की जोत की किरणें आकाश तक चीरतीं हुई चली जाती हैं, लगता है कि गहरे नीले सागर के निर्मल जल की लहर बहती आ रही है। सुन्दरसाथ जी श्री महामति जी राजजी के हुकुम से कहते हैं कि मेरे धनी के चरणों की अंगुलियां और अंगूठे के नखों को देखो, जो मेरे दिल में विराजमान है इसलिए मेरे दिल को अर्श कहा है। सुन्दरसाथ जी, अब हम विचार करें कि फिर हम क्यों अपने धनी के चरणों को नहीं देखते? श्री राजजी के चरण अति रसीले, अत्यन्त मीठे और सुन्दर हैं। जिनके ऊपर मेहर करके श्री राजजी महाराज दोनों चरण कमल हृदय में रख देते हैं, उस सुख को वही रूहें जानती हैं और जो श्री राज जी के चरणों को पकड़े रहे, वही परमधाम की रूह है। इन चरणों के रस को कोई और नहीं पी सकता। अब खेल में जिनसे श्री राज जी के चरण छूट जायें, उनको मोमिन कैसे कहा जाए। सुन्दर साथ जी, हमें तो श्री राज जी के चरणों को अपने नयनों की पुतलियों में बसाकर उसी में मग्न रहना है।

सुन्दर साथ जी, हम रूहें जो परमधाम में एक पल भी अपने धनी से जुदा न थीं, हम कैसे यहाँ अपने धनी को भूल गईं। सुन्दरसाथ जी, अब तो घर उठने का समय आ गया है। अब तो हमारे दिल में राजजी के लिए दर्द होना चाहिए। सुन्दरसाथ जी, हमें अपने आपको राजजी के प्यारे, लाडले सुन्दरसाथ बनकर दिखाना होगाा। सरकार श्री कहा करते थे कि जैसे हाथी के कानों में घण्टियां लगी होती हैं और वह उसी मस्ती में मगन होकर आगे की तरफ बढ़ता जाता है, हमें भी हाथी की तरह मस्त चाल चलनी है और राजजी के इश्क में गर्क होकर उनके चरणों में अपना ध्यान लगाना है। जो राजजी की लाडली रूहें हैं, उन्हें राजजी के सिवाय कुछ नहीं चाहिए। सुन्दरसाथ जी, आज दिन तक हमने जो किया सो किया लेकिन आज के बाद हमें माया की बातों को छोड़कर मन में सिर्फ एक ही विचार पैदा करना है कि हम अपने दिल को उनके काबिल कैसे बनायें ताकि उनके चरण हमारे दिल में आ सकें जो हमसे ना कभी जुदा थे ना जुदा हैं और ना कभी हो सकते हैं।

प्रणाम जी ! आपकी चरणरज लवली (जालंधर)

Nijanand App